स्वाधीनता आंदोलन और कवियों की कलम

शोधपत्र-हिन्दी

*डॉ. अनिता सोनी, ** रमेश कुमार गोहे

सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र मानने की भावना का उदय वस्तुतः अंग्रेजी शासनकाल में ही हुआ। उससे पूर्व भारत में क्षेत्र विशेष के लोग केवल अपनी जन्मभूमि को ही देश का पर्याय मानते थे। अपने क्षेत्र की सीमाओं तक ही उनकी दृष्टि का प्रसार था । कहना ना होगा कि वीरगाथा काल, भक्तिकाल व रीतिकाल में जो काव्य भाट, चारणों नें या राज्याश्रित कवियों ने लिखा उसमें एक जाति, एक जनसमूह और क्षेत्र विशेष के प्रति ही गौरव गाथा का भाव व्यक्त किया है, शायद इसीलिये कुछ आलोचकों ने आधुनिक काल से पहले लिखे गये काव्य को साम्प्रदायिक कहा है। उसके पीछे जो प्रेरणा थी उसे संकुचित और संकीर्ण देश प्रेम की संज्ञा दी है।

उन्नीसवी शती में भारतीय पाश्चात्य विचारों के सम्पर्क एवं प्रभाव में आये यातायात के साधनों के विस्तार से उत्तर से दक्षिण तथा पूर्ण से पश्चिम तक इस देश की सम्पूर्ण भारत वर्ष को अखंड इकाई माना जाने लगा। अब पहली बार सम्पूर्ण भारत एक इकाई के रुप में उभरकर सामने आया और यही एकता की भावना ने राष्ट्रीयता के विचारों को जन्म देना आरंभ किया। स्वतंत्रता संबंधी पाश्चात्य आदर्शो और दिन–प्रतिदिन बिगड़ती आर्थिक स्थिति, दुर्भिक्षों, संक्रामक रोगो, करो, बेरोजगारी आदि से उत्पन्न घोर निराशा और क्षोभ ने आग में घी का काम किया। राजनैतिक जागृति उत्पन्न होने पर पहली बार भारतीयों को महशुश हुआ की देश की प्रशासनिक व्यवस्था में उनका भी योगदान हो उनकी बातें सुनी जायें उनसे भी सलाह मशवरा लिया जायें।

ब्रम्हा समाज , प्रार्थना समाज और आर्य समाज ने भी भारत के पुनर्जागरण में अमिट मूल्यवान सहयोग प्रदान किया। हिन्दी भाषी प्रदेशों पर आर्य समाज और उसके संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। उन्होने हिन्दू समाज को कुरूतियों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों से मुक्त करने के लिए अनेक सुधार आंदोलनों का सुत्रपात किया। इन आन्दोलन के परिणाम स्वरूप देश में जागृति आई और देश वासियों में राष्ट्रीय भावना का अंकुर उपजा । साहित्य इस सब से अछूता कैसे रह सकता है। साहित्य के संदर्भ में कहा गया है ''साहित्य समाज का दपर्ण है ।''

आधुनिक युग में अंग्रेजो के शासन सुत्र संभालने पर 1857 के भारतीय संग्राम से राष्ट्रीय चेतना का सुत्रपात हुआ । सन् 1906 में ''स्वदेशी आंदोलन'' और स्वराज'' की चेतना ने जनैकता या राजनीतिक एकता का मार्ग सुगम कर दिया। सन् 1919–20 से जनैकता का सागर अपने पूर्ण रूप में प्रवाहित हुआ दिखाई देने लगा । राष्ट्रवाद की धारणा हिन्दी में अपने सर्वांग सम्पन्न रूप से बहुत कुछ नई है। राष्ट्रीय भावना भारतेन्दु काल की देश भक्ति में आंशिक रूप से दिखाई देने लगती है। भारतेन्दु ने राष्ट्रीय भावना के एक नये युग का सुत्रपात किया है। भारतेनदु ने अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध अपनी कलम चलाने का बीड़ा उठाया । अंग्रेजो की अफगान विजय पर अपनी ''विजय वल्लरी'' कविता में उन्होने विदेशी शासको की कटु आलोचना भी की है। देखिए काव्यांश :–

''स्ट्रे ची, डिजरैली, लिटन, चितय नीति के जाल।/फंसि भारत जरजर भयो, काबुल युद्ध , अकाल।।/सत्रु–सत्रु लडवाई दूरि रहि लखिय तमासा।/प्रबल देखिए जाहि जाहि मिलि दीजैं आसा ।।–''भारतेन्दु''

भारत भूमि की वंदना के गीतों की परम्परा का उन्मेष प.श्रीधर पाठक के हिन्द वंदना गीत से होता है । उसमें भारत के धन–वैभव, विद्या, ज्ञान, शक्ति शौर्य आदि के साथ साथ स्वाधीनता का जयद्योष मिलता है।

''जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द।
जय जयति जय प्राचीन हिन्द।।''

इसी प्रकार तत्कालीन कवि प्रेमघन 'राधाकृष्ण गोस्वामी , भारतेन्दु, राधाकृष्ण दास, अम्बिकादन्त व्यास, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त आदि कवियों ने देश की आर्थिक दुर्दशा, राजकीय अत्याचार, विदेशी साम्राज्य के प्रति विरोध भावना, किसानों की दरिद्रता आदि के विवध चित्र भी अंकित किये है। राजकीय अत्याचार, विदेशी साम्राज्य के प्रति

* सहा. प्राध्यापक हिन्दी विभाग, अनुसंधान एवं शोध केन्द्र ज.हा.शा. स्ना. महाविद्यालय, बैतूल
** शोधार्थी, अनुसंधान एवं शोध केन्द्र ज.हा.शा. स्ना. महाविद्यालय, बैतूल

विरोध भावना, किसानों की दरिद्रता आदि के विवध चित्र भी अंकित किये है। –प्रेमघन ने विदेशी वेषभूषा एवं इसे अपनाने वाले पर कटू व्यंग्य करते हुए कहा है–

''पढ़ि विद्या परदेश की बुद्धी विदेशी पाय।
चाल चलन परदेश की गई इन्हे अति भाय।।
ठठे विदेशी ठाठ सब, बनयो देश विदेश।
सपनेहूं जिनमें न कहुं भारतीयता लेस ।।
हिन्दुस्तानी नाम सुनि जब ये सकुचि लजात।
भारतीय वस्तु ही सो ये हाय धिनात ।।''
–''प्रेमघन''

द्विवेदी युग में राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक और राजनीतिक दोनों पक्ष समृद्ध हुए । सांस्कृतिक पक्ष के अन्तर्गत अतीत का गौरव गान , वर्तमान के प्रति क्षोभ और झुंझलाहट वीर पूजा की भावना तथा उज्जवल भविष्य का संदेश है। मैथिलीशरण गुप्त की भारत–भारती में भारत के उज्जवल और गौरवपूर्ण अतीत गौरव का गान किया है। गुप्तजी की भारत–भारती कविता का एक काव्यांश देखिए–

हम क्या थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी।/आओ सब मिलकर विचारें ये समस्याएं सभी।/संसार रूप शरीर में जो प्राण रूप प्रसिद्ध था,/सब सिद्धियों में जो कभी सम्पूर्णता से सिद्ध था।/हा हन्त बीते जी वही अब हो रहा भ्रिममाण है।/अब लोक रूप मयंक में भारत कलंक समान है'' –वाक्यांश–''भारत भारती''

साम्प्रदायिक विभेद होते हुए भी भारतवासियों में एकता का अभाव कवि को मान्य नही है। वह कहता है–

''क्या साम्प्रदायिक भेद से ऐक्य मिट सकता अहो।/बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहों।।

साम्प्रदायिक विभेद होते हुए भी भारतवासियों में एकता का अभाव कवि को मान्य नही है। वह कहता है–

''ईसावादी पारसी सिक्खा यहूदी लोग। /मुसलमान हिन्दी यहां है सबका संयोग।।

बालगंगाधर तिलक के सन् 1914 में कारागार से छूटने और फिर देश का नेतृत्व संभालने पर राजनैतिक क्षेत्र में एक नव स्फूर्ति, नव चेतना और नव युद्ध घोष के दर्शन हुए। इसी समय प्रथम महायुद्ध भी छिड़ गया। भारत वासियों के हदृय में क्रांति की लहर उमड़ने लंगी। तिलक के स्वतंत्रता सुत्र '' स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' ने कवियों में राष्ट्रीय चेतना का नया मंत्र फूंका । उनमें स्वाभिमान और देश अनुराग जाग उठा। देखिए एक काव्यांश गुप्तजी के शब्दों में –

''जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।/वह नर नही है, पशु निरा है और मृतक समान है।।

तिलक ने अपनी वृद्धावस्था आते देखकर उन्हे लगा कि उनके जीवन का समाप्ति विन्दु आ रहा था। उनकी कामना थी कि वे स्वराज्य का स्वप्न साकार होते देख सके। उनके बूढ़े कंठ के ओजस्ती आह्वान को सुनकर पुरा देश अपने स्वाधीनता के लक्ष्य को पाने के लिए अपने प्राणों को हथेली पर लिए दौड़ रहा था ।

''मैं बूढ़ा हूँ , वह दिन थोड़े है, चल बसने की तैयारी है।/जब तक भारत स्वाधीन न हो , तब तक न मरूं तैयारी है।।/मजबूत कलेजों को लेकर, इस न्याय दुर्ग पर चढ़ो चलो।/माता के प्राण पुकार रहे, संगठन करो बस बढ़े चलो।।

और इसी के साथ देशवासियों को जो करना पडेगा वह है।

वह धन लाओ, जीवन लाओ, आओ लाओ दृढ़ डोर लगे।/प्यारा स्वराज्य कुछ दूर नही , बस तीस कोटि का जोर लगे।।

(तिलक ''हिम किरिटनी माखन लाल चतुर्वेदी 1920 प्र.81)

कवि सनेही का देश प्रेम प्रेमोन्मत भी ऐसी तैयारी करता दिखाई देता है–

''निस्वार्थियों ने विश्व में शुभ कीर्ति है पाई सदा।/निज चित्त मंदिर में निरूधमता नही लाना कभी।।/जाए भले ही प्राण पर पीछे चरण धरना नही।/वर वीर भारत स्वप्न में भी विघ्न से डरना नही।।

(देश प्रेमोन्मत–सरस्वती 16 नवम्बर प्र.287)

कवि सनेही का ही एक स्वर और देखिए जो भारत वासियों की पराधिनता को स्वीकार नही करता और अपनी कविता में कहता है –

'' हमारे जन्म सिद्ध अधिकार अगर छीनेगा कोई यार।/रहेंगे कब तक मन को मार , सहेंगे कब तक अत्याचार।।/चूर कर देंगे अभियान, मिटा के झूठी शेखी शान।/वही हम है भारत सन्तान , वही हम है भारत सन्तान।।/(भारत सन्तान–1919 सांत्वना प्रष्ठ 9)

कवि सनेही की राष्ट्रीयता में स्वतंत्रता के लिए तड़प, उमंग, जोश , द्रढ़ और कर्मठता है । इसलिए वह कहता है–

परतन्त्रे भाग जा चल हठ, मम आंखो से

ओझल हो ।/क्यों ? इसलिए कि पावन देवी स्वतंत्रता से मंगल हो।।/स्वतंत्रे तुम आओ , आओ, शक्ति खाग पर शान धरो।/हो सगर्व निज योग्य गीत अब बठै कंठ में गान करो।।

(प्रकृति संदेश–1919 सांत्वना प्रष्ठ 5.5)

सनेही का काव्य –समूचे राष्ट्र के लिए एकता का संदेश देता है और कहता है–

राष्ट्रयज्ञ के लिए प्रेम से हाथ बढ़ाओ।/नीचे गिरने दो न देश को उच्च उठाओ।।/नौका अपनी जीर्ण , प्रबल वेग युत धार है।/खेओ सब मिलकर अगर तो बस बेड़ा पार है।।

(प्रकृति संदेश–1919 सांत्वना प्रष्ठ 5.29)

धीर–धीरे स्वराज्य की अभिलाषा बल पकड़ने लगी । सशक्त क्रांति तक के गीत गाये जाने लगे । गोरों द्वारा काले लोगों पर होने वाले अत्याचारों के प्रति कवियों का आक्रोश उत्तरोत्तर तीव्र होने लगा। स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रवीरों की पुकार होने लगी। माखनलाल चतुर्वेदी अपनी 'जवानी' शीर्षक कविता में नवयुवकों को स्वातन्त्र्य के लिए आत्म बलिदान की प्रबल प्रेरणा देते हुए कहते है–

द्वारा बलि का खोल चल भूड़ोल कर दे।/एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दे।।/मसल कर अपने इरादों सी उठा कर।/दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दे।।/रक्त है या नसों में शुद्र पानी।/जांच कर तू ,शीश देकर जवानी।।

स्वतंत्रता संग्राम के समय माखनलाल चतुर्वेदी को 1923 में तीन माह का सश्रम कारावास भी हुआ था। माखनलाल राष्ट्रीय चेतना के कवि है । वीरों के कदमों तले बिछ जाने की चाह मे ''पुष्प की अभिलाषा'' में पुष्प के क्या भाव व्यक्त किये है ।

स्वतंत्रता की प्रबल चाह रखने वाले इस कवि ने एक विरल प्रश्नोत्तर दृष्टि से महात्मागांधी के दक्षिण आफ्रिका संग्राम पर ''निःशस्त सैनानी'' कविता लिखी जिसकी कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है।

प्यार ? उन हथकड़ियों से और कृष्ण के जन्म स्थल से प्यार /हार ? कंधों पर चुभती हुई अनोखी जंजीर है हार।

अपनी एक अन्य कविता में कवि के भाव देखिए

द्वार बलि का खोल चल भूडोल कर दे/एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दे/चढ़ा दे स्वातंत्र्य प्रभू पर अमर पानी/विश्व माने तू जवानी है जवानी।।

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने अनेक गीतों में स्वतंत्रता के लिए प्राण न्यौछावर करने को ललकारा है। पुरस्कार कैसा नामक अपनी कविता में वे कहती है।

आज तुम्हारी लाली से हा`मां के मस्तक पर हो लाली/काली जंजीरे टूटे काली जमुना में हो लाली/

उनकी एक प्रसिद्ध कविता की पंक्तियों को कौन नही जानता जिसके कारण उन्हे सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली थी देखिए।

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी/बुन्देले हरबोलों के मुंह से हमने सुनी कहानी थी/खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

कवयित्री ने जिस झांसी वाली रानी की वीरता का वर्णन अपनी कविता में किया है, उन्ही रानी का एक दुलर्भ पत्र प्राप्त हुआ है जो उन्होने बानपुर के राजा मर्दनसिंह को संवत् 1914 में लिखा था में स्वंय रानी के स्वराज के प्रति क्या विचार थे–रानी ने लिखा है –''कै सुराज भओ चाहिए स्वशासन भओ चाहिये''

सन्दर्भ–(स्वराज संदर्भ, स्वराजसंस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, म.प्र. शासन भोपाल) (1857 मुक्ति संग्राम के 150 वर्ष पर) पयामे आजादी अजी मुल्ला खान द्वारा संपादित और प्रकाशित सन् 1857 के महासमर का मुख पत्र था, जो आखिरी मुगल सम्राट बहादूर शाह जफर के समर्थन में विप्लव को निरंतर गति दे रहा था ।

हम है इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा है /पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी न्यारा है।

सन्दर्भ (स्वराज सन्दर्भ स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, म.प्र. शासन भोपाल) (1857 क्रांति के 150 वर्ष पर) मो॰ हुसैन आजाद ने अपनी देश भक्ति भरी एक शायरी में अपने देश की सुबह के सूरज (आफताबे सुबहे वतन) से पुछा कि तू किधर है ? तेरे बिना तो इस संसार में अंधेरा ही अंधेरा है–

''अय आफताबे सुबहे वतन तू किधर है आज।/तू किधर है कि कुछ नही आता नजर है आज।।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की 'कविता का आह्वान 'पंक्तियां देखिये–

कांतिधात्रि । कविते जाग उठ आडम्बर में आग लगा दे।/पतन पाप पाखंड जले,जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।।/

एक अन्य कविता का भाव देखिए–

यह अरम्य झुरमुट जो कांटे अपनी रहा बन

ले।/क्रीतदास यह नहीं किसी का जो चाहे अपना ले/

नेताजी का तुलादान कविता में गोपाल प्रसाद व्यास

''कदम कदम बढ़ाए जा''/अपने इकलौते का चित्र साथ में लाई हूँ/नेताजी लो र्स्वस्व मेरा, मै बहुत दूर से आयी हूं/वृद्धा ने दी तस्वीर पटक शीशा चरम कर चूर हुआ/स्वर्ण चौखट निकल आप उसमें खुद ही दूर हुआ/

श्याम लाल पार्षद –तिरंगे झंडे की विशेषता, उसके प्रति एवं देश धर्म के लिए हमारे कर्त्तव्य के प्रति, देश के बलिदान के प्रति वीरो में उत्साह वर्धन के लिए कवि ने अपनी सुन्दर रचना ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा'' में कैसा भाव व्यक्त किया है । जरा देखिए ?

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,झंडा ऊंचा रहे हमारा/सदा शक्ति बरसाने वाला, वीरो को हरसाने वाला,/मातृभूमि का तनमन सारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा/इस झंडे के नीचे निर्भय हो स्वराज यह अविचल निश्चय/

निराला का एक कांव्यांश देखिए–

''दे मैं करू वरण/जननि , दु:ख हरण पद राग रंजित मरण/भीरूता के बंधे पाश सब छिन्न हो,/मार्ग के रोध विश्वास से भिन्न हो(निराला काव्य) सोहनलाल द्विवेदी ने स्वतंत्रता की राह में अपने बलिदान की बात किस तरह की है।

वन्दना के इन स्वरो में एक स्वर मेरा मिला दो/जब हृदय के तार बोले , श्रंखला के बंद खोले/हो जहां बलि शीश अगणित , एक सिर मेरा भी मिला दो (सोहनलाल द्विवेदी भैरवी)

अंहिसावादी काव्य धारा –

मैं अमर हूँ, मौत से डरता नही/सत्य हूँ मिथ्या डर सकता नही/मैं निडर हूँ शस्त्र का क्या काम/मैं अंहिसक हूँ न कोई शत्रु है ।

(रामनरेश त्रिपाठी)

गोपालसिंह नेपाली–हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय कवियों में नेपाली जी का विशिष्ठ स्थान है । 1962 की चीन क्रांति के समय उनकी लिखी कविता को देखिए –

''स्वतंत्रता दीपक''/झूम झूम बदलिया , चूम ,चूम बिजलियां/आंधिया उठा रही, हलचले मचा रही/लड़ रहा स्वदेश हो, शांति का ना लेश हो/हमारे देश के स्वाधीनता सैनानियों ने लड़ते लड़ते क्या कहा है, जरा देखिए इकबाल का वो प्रसिद्ध गीत जो आज भी प्रत्येक भारतीय की जबान पर है–

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा/हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्तां हमारा राष्ट्र की वंदना करने के लिए आचार्य बंकिम चंद्र चटोपाध्याय ने वन्दे मातरम् का नारा दिया एवं वन्दे मातरम् गीत लिखकर उसे रोज प्रार्थना सभाओ में गाया जिसे हमारे देश में आज राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया है–

वन्दे मातरम्/सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्/शस्य श्यामलाम् मातरम्/वन्दे मातरम्

इसी तरह आचार्य रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी हमारे देश को स्वाधीन बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनके द्वारा रचित गीत ''जन गण मन '' को हमारे देश ने राष्ट्रगाण के रूप में स्वीकार किया है। मुक्ति बोध की पीड़ा का एक दृश्य देखिए जो स्वतंत्र होने के लिए छटपटाता है। ''मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है/हर एक छाती में आत्मा अधीरा है/प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है''/ मैथिलिशरण गुप्त जी ने वीरों के पक्ष में लिखा है ''इस शरीर की सकल शिराएं''/इस शरीर की सकल शिराएं/हो तेरी तंत्री के तार।/आघातों की क्या चिंता है/उठने दे उंची झंकार।। मैथिलिशरण गुप्त की एक कविता में उन्होने नारि पक्ष से पुरूषों के लिए किये जाने वाले क्षत्रिय धर्म की बात इस प्रकार की है। स्वयं सुसज्जीत करके क्षण में/प्रियतम को प्राणों के पण में/हमी भेज देती है रण,/ क्षात्र धर्म के नाते।। बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता हिन्दुस्तान हमारा है में कवि का भाव देखिए– कोटि–कोटि कंठो से निकली आज यही स्वर धारा है।/भारत वर्ष हमारा है यह हिन्दुस्तान हमारा है। इस प्रकार कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से लोगो में जनजाग्रति लाई और स्वाधीनता आंदोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. स्वराज सन्दर्भ 2. हिन्दी साहित्य का इतिहास (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) 3. कवि श्री निराला के काव्य में विद्रोह एवं राष्ट्रीयता के स्वर (दुर्गा.क.ही.) 4. रामधारी सिंह दिनकर के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का अनुशीलन (तिवारी विनोद) 5. सुभद्राकुमारी चौहान व्यक्तित्व एवं कृतित्व– (द्विवेदी सुर्यमुखी) 6. माखनलाल चतुर्वेदी एक भारतीय आत्मा और बालकृष्ण शर्मा नवीन के राष्ट्रीय काव्य का तुलनात्मक अनुशीलन – (कृष्णकुमार मिश्र) 7. सोहनलाल द्विवेदी का काव्य (जग.सी.टी.) 8. आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना 1950 ई (सुरेश चन्द्र जैन) 9. हिन्दी साहित्य का इतिहास (हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी)